

**अहित** पुं. (तत्.) 1. हित का अभाव 2. बुराई 3. अकल्याण 4. हानि 5. शत्रु, वैरी वि. विरोधी, हानिकारक।

**अहितकर** वि. (तत्.) अहित करने वाला, हानिकारक।

**अहिपति** पुं. (तत्.) 1. सर्पराज 2. शेषनाग 3. वासुकि नाग।

**अहिफेन** पुं. (तत्.) 1. सर्प के मुँह की लार 2. अफीम।

**अहिम** वि. (तत्.) 1. जो (अति) शीतल न हो, 2. कुछ उष्ण, कदोष्ण, कोसा।

**अहिमात** पुं. (तत्.) कुम्हार के चाक का वह गड्ढा जिसके आधार पर चाक कील पर चलाया जाता है।

**अहियान** पुं. (तत्.) शेषशायी विष्णु।

**अहिरत** वि. (तत्.) जिसकी पूजा की गई हो। सम्मानित (व्यक्ति)

**अहिल्या** स्त्री. (तद्.) दे. अहल्या ।

**अहिवात** पुं. (तद्.) 1. अभिवादनीयता, अभिनंदनीयता 2. सौभाग्य, सुहाग प्रयो. सफल होइ अहिवात तुम्हारा- तुलसी।

**अहिवाती** स्त्री. (तद्.) 1. अभिनंदनीय 2. सौभाग्यवती।

**अहीक** पुं. (तत्.) बौद्धदर्शनानुसार दस क्लेशों में से एक।

**अहीन** वि. (तत्.) 1. जो हीन न हो, जो तुलना में अन्य से हीन या तुच्छ न हो 2. श्रेष्ठ, महान 3. दोष-रहित 4. पूरा, संपूर्ण पुं. 1. कई दिनों तक चलने वाला यज्ञ विशेष 2. लंबा साँप 3. वासुकि।

**अहीर** पुं. (तद्.) 1. एक जाति-विशेष जो गाय-भैंस पालती है तथा दूध बेचती है 2. अभीर, अभीर ग्वाला।

**अहीरी** पुं. (तद्.) एक राग-विशेष जिसमें सभी स्वर कोमल होते हैं स्त्री. ग्वालिन, अहीरिन, अभीरी वि. अहीर से संबंधित, हीरो जैसा।

**अहीश** पुं. (तत्.) 1. साँपों का राजा 2. शेषनाग 3. (शेषावतार) लक्ष्मण और बलराम।

**अहुत** पुं. (तत्.) 1. जप, ब्रह्म यज्ञ, वेद-पाठ, धार्मिक चिंतन-मनन आदि वे कर्म जिनमें आहुति नहीं दी जाती 2. जिसे होम या आहुति न मिली हो वि. बिना होम किया हुआ।

**अहृदय** वि. (तत्.) 1. हृदयहीन 2. अरसिक विलो. सहृदय।

**अहे** अव्य. (तत्.) खेद, निंदा या अलगावबोधक, संबोधन-सूचक या आश्चर्यसूचक अव्यय।

**अहेतु** वि. (तत्.) 1. हेतु रहित, बिना कारण का, निमित्तरहित 2. व्यर्थ पुं काव्य. एक काव्यालंकार जिसमें कारण के न होने पर भी कार्य का होना दर्शाया जाए।

**अहेर** पुं. (तद्.) शिकार, आखेट।

**अहेरी** वि. (तत्.) शिकारी, आखेटक, व्याध।

**अहो** अव्य. (तत्.) करुणा, हर्ष, विस्मय, धिक्कार, दुःख आदि भाव व्यक्त करने वाला, उद्गार।

**अहोई** स्त्री. (तत्.) 1. अनहोनी 2. संतानप्राप्ति के लिए दीपावली के सात दिन पूर्व अष्टमी के दिन स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला व्रत।

**अहनिमान** पुं. (तत्.) पारसी धर्मानुसार पाप या अंधकार का देवता, शैतान, 'अहरिमान'।

**अहल** वि. (अ.) 1. योग्य, पात्र 2. अधिकार।

**अहलकार** पुं. (अर.) कर्मचारी, कारिंदा।

**अहलखाना** स्त्री. (अर.) गृहस्वामिनी, पत्नी, भार्या।

**अहलवतन** पुं. (अर.) हमवतन, देशवासी।

**अहलिया** स्त्री. (अर.) पत्नी, भार्या, गृहस्वामिनी, घरवाली।

**अहलीयत** स्त्री. (अर.) 1. योग्यता, पात्रता 2. निपुणता।